Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 7 | ISSUE : 1 | JANUARY 2021

हिंदी बाल साहित्य में पर्यावरण जागरूकता

अमित कुमार [1] | दुर्गा दत्त शर्मा [2]

[1] सहायक आचार्य (भूगोल), राजकीय महाविद्यालय, भादरा, जिला हनुमानगढ़, राजस्थान

[2] सह–आचार्य (भूगोल), डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्रीगंगानगर, राजस्थान

ABSTRACT:

आज पर्यावरण का संकट मानव जीवन का सबसे बड़ा सरोकार और वैश्विक चिंतन का केंद्र–बिंदु बन गया है। मनुष्य जनित पर्यावरणीय समस्याओं ने भावी पीढ़ियों और जीव–जगत् को संकट में डाल दिया है। वस्तुतः हमारी अदूरदर्शिता से पृथ्वी के अस्तित्व के समक्ष चुनौती खड़ी हो गयी है। अतः भावी पीढ़ियों के हितों को दृष्टिगत रखते हुए सतत विकास की अवधारणा के मद्देनज़र पिछले कुछ दशकों से पर्यावरण जागरूकता और पर्यावरण संरक्षण को बल मिला है। भारत में तो पर्यावरण चिंतन और संरक्षण की सुदीर्घ एवं समृद्ध परंपरा रही है, जिसकी झलक यहाँ के बाल साहित्य में भी प्रतिबिंबित होती है। पंचतंत्र से लेकर अद्यावधिपर्यंत बाल साहित्य पर्यावरण के प्रति अतीव संवेदनशील और प्रकृति चित्रण युक्त है। यदि हिंदी बाल साहित्य पर दृष्टिपात करें तो इसकी विभिन्न विधाओं में बच्चों के पर्यावरण बोध एवं उनको पर्यावरण के प्रति संस्कारित करने हेतु पर्याप्त सामग्री उपलब्ध है। वर्तमान साइबर भौतिक युग के चुनौती भरे समाज में नई पीढ़ी को सन्मार्गोन्मुख करने में बाल साहित्य महत्ती भूमिका निभा सकता है। हिंदी बाल साहित्य में पर्यावरण जागरूकता विषयक अध्ययन पर्यावरण संरक्षण की दिशा में सार्थक पहल की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं।

KEYWORDS:

पर्यावरण जागरूकता, सतत विकास, पर्यावरण संरक्षण, पर्यावरण बोध, साइबर भौतिक युग, संसाधन विदोहन, आर्थिक विकास, जनसंख्या विस्फोट, औद्योगीकरण, शहरीकरण, बाज़ारीकरण, पर्यावरणीय साहित्य, जनसंख्या बम, अंतरिक्षयान पृथ्वी, हरित विकास, पर्यावरण चिंतन, प्राकृतिक तत्त्व, पर्यावरणीय नैतिकता, पंचभूत, पर्यावरणीय संतुलन, जैव विविधता, वैश्विक तापन, जलवायु परिवर्तन, ओज़ोन अपनयन, पर्यावरण प्रदूषण, प्राकृतिक आपदाएं, मृदा अपरदन, हिमस्खलन, भूस्खलन, वनोन्मूलन, भौतिकवादी–भोगवादी संस्कृति, लू।

आज पर्यावरण का संकट मानव जीवन का सबसे बड़ा सरोकार और वैश्विक चिंतन का केंद्र–बिंदु बन गया है। मनुष्य द्वारा अविवेकपूर्ण संसाधन विदोहन और प्रकृति विरुद्ध आर्थिक विकास, जनसंख्या विस्फोट, औद्योगीकरण, शहरीकरण तथा बाज़ारीकरण जनित पर्यावरणीय समस्याओं ने भावी पीढ़ियों और जीव–जगत् को संकट में डाल दिया है। वस्तुतः हमारी अदूरदर्शिता से पृथ्वी के अस्तित्व के समक्ष चुनौती खड़ी हो गयी है। अतः भावी पीढ़ियों के हितों को दृष्टिगत रखते हुए सतत विकास की अवधारणा के मद्देनज़र पिछले कुछ दशकों से पर्यावरण जागरूकता और पर्यावरण संरक्षण को बल मिला है। वैश्विक भौगोलिक एवं पर्यावरणीय साहित्य 'मौन बसंत', 'साझी संपदा की त्रासदी', 'जनसंख्या बम', 'अंतरिक्षयान पृथ्वी', 'वृद्धि की सीमाएं', 'केवल एक ही धरती' के माध्यम से पर्यावरणीय समस्याओं और इनके भयावह परिणामों के प्रति मनुष्य को सावचेत करता है; वहीं 'हमारा साझा भविष्य', 'लघु ही सुंदर है', 'हरित विकास', 'सतत विकास' को रेखांकित कर इस संकट के समाधान हेतु मार्ग प्रस्तुत करता है।

भारत में तो पर्यावरण चिंतन और संरक्षण की सुदीर्घ एवं समृद्ध परंपरा रही है। प्रकृति पूजा, प्राकृतिक तत्त्वों की पवित्रता व निर्मलता, जीवों के प्रति करुणा, पर्यावरणीय नैतिकता, त्याग के साथ उपभोग आदि भारतीय संस्कृति के मूल में रहे हैं। भारत में मनुष्य प्रारंभ से ही पर्यावरण और इसके तत्त्वों की महत्ता से परिचित रहा है तथा उसने प्रकृति के साथ अपना तादात्म्य बनाये रखा। जगत् के मूलाधार– पंचभूतों, यथा क्षिति, जल, पावक, गगन, समीरा की शुद्धता पर बल दिया गया ताकि पर्यावरणीय संतुलन बना रहे। उक्त परंपरा की झलक भारतीय बाल साहित्य में भी प्रतिबिंबित होती है। पंचतंत्र से लेकर अद्यावधिपर्यंत बाल साहित्य पर्यावरण के प्रति अतीव संवेदनशील और प्रकृति चित्रण युक्त है।

हिंदी के बाल साहित्यकार पर्यावरण के प्रति सचेत हैं। बाल साहित्य की विभिन्न विधाओं में बच्चों के पर्यावरण बोध एवं उनको पर्यावरण के प्रति संस्कारित करने हेतु पर्याप्त सामग्री उपलब्ध है। वृक्ष कथाओं, जीव–जंतुओं की कथाओं, मनुष्य और पशु–पक्षी संवाद उद्धरणों, बाल काव्य आदि में स्थान–स्थान पर पर्यावरण चिंतन परिलक्षित होता है। पर्यावरण एवं प्रकृति के विविध अंगोपांगों, यथा सूरज, चाँद–सितारे, पर्वत, नदी, झरने, झील, हवा, जल, ऋतुएं, धूप, बादल, वर्षा, इन्द्रधनुष, पेड़–पौधे, वन–प्रान्तर, जंगल, फल–फूल, पशु–पक्षी, जीव–जंतु, तितली इत्यादि बाल साहित्य की मुख्य विषय–वस्तु रहे हैं, क्योंकि इनसे बच्चों का सहज अनुराग एवं सन्निकटता होती है। प्रकृति के मानवीकरण, प्रकृति और इसके अंगोपांगों के सजीव चित्रण, जल संरक्षण तथा वनों और जैव विविधता के महत्त्व पर दृष्टिपात करने के साथ–साथ बाल साहित्य में ज्वलंत पर्यावरणीय समस्याओं, यथा वैश्विक तापन, जलवायु परिवर्तन, ओज़ोन अपनयन, पर्यावरण प्रदूषण, जैव विविधता क्षरण, प्राकृतिक आपदाओं, मृदा अपरदन, हिमस्खलन, भूस्खलन, वनोन्मूलन आदि को भी सरल एवं सहज भाषा में प्रस्तुत किया गया है। बाल साहित्य कहीं भौतिकवादी–भोगवादी संस्कृति पर प्रहार करता है तो कहीं निरंतर पनप रहे 'कंकरीट के जंगलों' से पर्यावरण को हो रही क्षति को उज़ागर करता है।

अनेक साहित्यकारों, जैसे पं. सोहनलाल द्विवेदी, परशुराम शुक्ल, राजा चौरसिया, जगदीश चन्द्र शर्मा, रमेशचन्द्र पन्त, राजकिशोर सक्सेना, अशोक चक्रधर, योगेन्द्र सिंह भाटी 'योगी', रामनिवास 'मानव', नागेश पाण्डेय 'संजय', प्रभा पन्त, द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी, गीतकार गोपाल सिंह नेपाली, कैलाश वाजपेयी, राष्ट्रबन्धु, सीताराम गुप्त, तारादत्त निर्विरोध, कल्पनाथ सिंह, रोहिताश्व अस्थाना, सुन्दरलाल 'अरुणेश', बाबूलाल शर्मा 'प्रेम', प्रभाष मिश्र 'प्रियभाष', रवीन्द्र कुमार 'राजेश', स्नेह लता, शेषपाल सिंह 'शेष', राजनारायण चौधरी, विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद', चक्रधर 'नलिन', भैरूँलाल गर्ग (संपा.) इत्यादि की बाल रचनाओं में पर्यावरण संचेतना मुखरित हुई है।

हिंदी बाल साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर परशुराम शुक्ल ने अपनी बाल कविताओं, बाल कहानियों, शिशु गीतों आदि में प्रकृति चित्रण, पर्यावरण एवं वन्य जीवों को विशेष स्थान दिया है। वे पर्यावरण को परिभाषित करते हुए इसके विविध तत्त्वों के बारे में बताते हैं –

''पर्यावरण किसे कहते हैं ?
आओ हम सब इसको जानें।
पर्यावरण प्रदूषण के सब,
खतरों को पहले पहचानें।
जो है चारों तरफ हमारे,
पर्यावरण उसे कहते हैं।
ध्वनि, मिट्टी, जल, वायु आदि सब,
इसके अंतर्गत रहते हैं।''

शुक्ल वैश्विक तापन एवं वनोन्मूलन जैसी समस्याओं के प्रति भी सजग हैं। एक बाल गीत के माध्यम से वे बच्चों को वृक्षारोपण का महत्त्व बताते हुए उन्हें इसके लिये प्रेरित करते हैं –

''आओ बच्चों पेड़ लगायें,
पेड़ लगेंगे हवा चलेगी।
लू गर्मी से मुक्ति मिलेगी,
यह रहस्य सबको समझायें।''

राजा चौरसिया (अपने हाथ सफलता है) मनुष्य द्वारा पर्यावरण को पहुंचायी गयी क्षति और इसकी गुणवत्ता में हो रहे ह्रास से बच्चों को अवगत करवाते हैं –

''आज प्रदूषण बढ़ता जाता,
पर्यावरण बिगड़ता जाता।
दुष्परिणामों का पारा अब तो

कितना ऊपर चढ़ता जाता।''

वे बच्चों के माध्यम से पर्यावरण बचाने हेतु संकल्पवान हैं –

''पर्यावरण बचायेंगे हम,

हरे–भरे दिन लायेंगे हम।''

मानवीय गतिविधियों के परिणामस्वरूप तीव्र गति से वनों का विनाश हुआ है। वृक्ष प्राणवायु ऑक्सीजन प्रदाता के नाते पृथ्वी पर जीवन के आधार हैं, जिनके बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। कवि रमेशचन्द्र पन्त पर्यावरण संकट के इस दौर में वृक्षविहीन पृथ्वी की नीरवता से बच्चों को परिचित करवाना चाहते हैं –

''इस धरती पर/ सोचो किंचित्/ पेड़ नहीं यदि होते/ नहीं ओषजन होती भू पर/ प्राण तत्त्व का मूल/ जड़ होती यह सारी दुनिया/ पत्थर केवल मूक/ नहीं कुतरते फलफुनगी पर/ बैठे मजे से तोते/ नहीं सुनाई देती प्यारी/ कोयल जी की कूक।''

जल संकट के समाधान हेतु सामूहिक प्रयासों के साथ–साथ दैनिक जीवन में जल का सदुपयोग नितांत आवश्यक है। अशोक चक्रधर अपनी कविता ''पानी की कीमत'' में कथात्मक शैली में बच्चों को जल का महत्त्व समझाते हुए इसके सदुपयोग का संदेश देते हैं –

''चिंटु भइया रोज नहाते/ बाथरूम के अंदर/ उछल–कूदकर खूब नहाते/ लगते नटखट बंदर...../ एक दिवस पूरी टंकी का/ खत्म हुआ जब पानी/बिजली भागी हुआ अंधेरा/ याद आयी नानी...../समझ आयी पानी की कीमत/ आयी भूलें याद/ ग़लती पर अपनी पछताये/ खूब करी फरियाद/ उसको यह माँ ने समझाया/ जल अमृत होता है/समझबूझकर खर्च करें तो/ पड़ता कब टोटा है।''

रामनिवास 'मानव' ''वृक्षों का संवाद'' कविता में वृक्षों का मानवीकरण कर मानवीय प्रहार के प्रति उनकी व्यथा को मर्मस्पर्शी भाव में बच्चों के समक्ष रखते हैं –

''दुःखी बहुत हूँ मित्र मैं, क्या बतलाऊँ बात,

आये दिन करने लगा, अब मानव उत्पात।

विपदा बड़ी भारी है,

चलती नित्य आरी है।

तब बोला तरु दूसरा, सुन मेरे मनमीत,

स्वार्थ में डूबा मनुष्य, नहीं किसी से प्रीत।

यदि नहीं वह समझेगा,

फल वही सब भोगेगा।''

शेषपाल सिंह 'शेष' भी पर्यावरण में सुधार को प्राथमिकता देते हैं –

''पर्यावरण प्रदूषण से धरती की हालत ख़स्ता है।

पर्यावरण सुधार आज की पहली आवश्यकता है।''

निष्कर्ष:

हिंदी के बाल साहित्यकारों की रचनाओं में पर्यावरण को उचित स्थान मिला है। वर्तमान साइबर भौतिक युग के चुनौती भरे समाज में नई पीढ़ी को सन्मार्गोन्मुख करने में बाल साहित्य महत्ती भूमिका निभा सकता है। अतः आज बालमनोनरूप साहित्य सृजन तथा बाल पत्रिकाओं को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। हिंदी बाल साहित्य में पर्यावरण जागरूकता विषयक अध्ययन पर्यावरण संरक्षण की दिशा में सार्थक पहल की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं।

REFERENCES

1. स्वप्नदीप परमार – ''डॉ. परशुराम शुक्ल की बाल कविता में प्रकृति, पर्यावरण तथा वन्य जीव'', इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ मैनेजमेंट सोशियोलॉजी एंड ह्यूमैनिटीज, वो. 9, इश्यू 5, 2018, पृ. 34–42.

2. राजा चौरसिया – अपने हाथ सफलता है, बालवाटिका प्रकाशन, भीलवाड़ा, 2009, पृ. 28.

3. विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद' – ''पर्यावरण संरक्षण में बाल काव्य की भूमिका'', इंडिया वाटर पोर्टलः हिंदी, 3 फरवरी, 2014.

4. रमेशचन्द्र पन्त – 101 बाल कविताएं, उत्कर्ष प्रकाशन, विद्यापुर, द्वाराहाट, अल्मोड़ा, 2006.

5. अशोक चक्रधर – मीठी कर लें अपनी बोली, प्रकाशक एक्सप्रेस बुक, नई दिल्ली, 2011, पृ. 24–25.

6. रामनिवास 'मानव' – मिलकर साथ चलें, 2012.